वनों की नीलामी का विरोध किया। इन्हें गिरफ्तार कर जेल में बन्द कर दिया गया। बाद में अल्मोड़ा जिले में चाचरीधार और चमोली में म्यूंडार में जनता जन आन्दोलन के द्वारा पेड़ों की कटाई रोकने में सफल हुई।[16]'' इस प्रकार के सरकारी कार्यवाही के विरुद्ध जो वनों को रेगिस्तान बनाने के लिये और यहाँ के निवासियों के मुँह से निवाला निकालने का कार्य कर रहे थे जनता ने मुँह तोड़ जवाब दिया और सरकार को विवश होकर वनों की नीलामी को रोकना पड़ा। सरकार व सत्ता का यह चरित्र है कि वह परिस्थितियों को देख कर कार्य करती है किन्तु अन्दर ही अन्दर चीजों को पकाती रहती है। इसी प्रकार का एक दूसरा चिपको आन्दोलन मोर्चा पुनः उत्पन्न होता है जब अलकनन्दा की सत्यक बड़ियार गाड का मालगडडी क्षेत्र रहा है। वहाँ लगभग 2500 पेड़ काटने के लिये निश्चित किये गये थे। इसके विरुद्ध भी जन आन्दोलन किया गया। महिलाओं ने बढ़-चढ़ कर इसमें भी भाग लिया। कटवाने के सारे प्रयास विफल हो गये। बहुगुणा जी का 9 जनवरी, 1979 को प्रारम्भ हुआ प्रार्थनामय उपवास 13 दिनों तक जंगल में चला। इन्हें बन्दी बनाया गया और टिहरी और देहरादून की जेलों में 1 फरवरी तक जारी रहा। सुन्दरलाल बहुगुणा के चिपको आन्दोलन को सफलता प्राप्त हुई। वन काटने के आदेश को रोक दिया गया और वन संबंधी समस्याओं पर बातचीत करने का सरकार ने न्योता भी दिया। वनों के महत्त्व को दर्शाते हुए उच्चतम न्यायालय का निर्णय दृष्टव्य है -

> ''वनों के संबंध में फैसले में कहा गया, जीवन के लिये अनिवार्य हवा और पानी प्रकृति की महत्त्वपूर्ण देन है - अनादिकाल से बस्तियाँ नदियों के तट पर और पानी के निकट पनपी हैं। वनों में प्राकृतिक रूप से बिमारियों के उपचार के लिये जड़ी-बूटियों के रूप में औषधियाँ पैदा होती हैं। हमारे पूर्वज जानते थे कि पेड़ मानवजाति के मित्र हैं और मानव अस्तित्व व सभ्यता के विकास के लिए वन अनिवार्य हैं। वनों ने ऋषियों को आश्रय दिया और वहीं पर प्राचीन गुरुकुल थे।[17]''

इन्द्रमणि सेमवाल ने चिपको आन्दोलन के दूसरे पक्षों की ओर भी संकेत किया है कि इस आन्दोलन से जुड़ी और चीजें भी अपना महत्त्व रखती है। भूस्खलन में कई लोग दबकर मर गये। इससे चिपको आन्दोलन को एक नई दृष्टि मिली कि वनों की रक्षा केवल तत्काल आर्थिक लाभ के लिये ही नहीं बल्कि भूस्खलन और भूक्षरण को रोकने की दृष्टि से उससे भी अधिक है।[18] सन् 1990 में चिपको के नेताओं ने बीज बचाओ आन्दोलन (बी.बी.ए.) चलाया क्योंकि भूस्खलन और भूक्षरण से हिमालय के अचंलों में खेती को हानि

---

16. सुन्दरलाल बहुगुणा, चिपको, पृष्ठ 5-6.
17. सुन्दरलाल बहुगुणा चिपको सन्देश, पृष्ठ 13.
18. इन्द्रमणि सेमवाल, के लेख से 'मानव और प्रकृति के प्रेम मूलक सबंधों का अभिनव जन आन्दोलन' पृष्ठ 1.

Scanned with CamScan

पहुँच रही थी। इस आन्दोलन ने जन चेतना का प्रसार किया और चिपको आन्दोलन को एक नया आयाम प्रदान किया। इस नारे के साथ कि **''पहाड़ की हड्डी टूटेगी, देश की धरती डूबेगी।''**

चिपको आन्दोलन समय के साथ शक्तिशाली होता गया। वह केवल वनों को काटने तक ही सीमित नहीं रहा बल्कि वह वन निवासियों की आर्थिक व्यवस्था से भी जुड़ गया। चिपको आन्दोलन का एक माँग पत्र **सुन्दरलाल बहुगुणा** ने प्रस्तुत किया जिसमें मुख्य मांगें थी - ''हिमालय के वनों की मुख्य उपज राष्ट्र के लिये जल है और कार्य मिट्टी बनाना, सुधारना और उसे टिकाये रखना है। इसलिये इस समय खड़े हरे पेड़ों की कटाई उस समय (10 से 25 वर्ष) तक स्थगित रखी जानी चाहिए.... हिमालय में 60 प्रतिशत क्षेत्र पेड़ों से आच्छादित नहीं हो जाता है। ...... पाँच 'एफ' फूड, जिसमें नट्स, तेल देने वाले फलों के बीज, शहद शामिल है, फोड्डर, फॅयूल, फर्टिलाइजर, फाइबर पेड़ लगाये जाय। खाद्य चारा, ईंधन, उर्वरक और रेशा देने वाले पेड़ों का रोपड़ सर्वत्र ढालदार कृपि भूमि और वन पर किया जाये।..... चिपको हिमालय के लोगों की समस्या का ही नहीं, सारी मनुष्य जाति की समस्या का उत्तर है।[19]''

वास्तव में, चिपको आन्दोलन प्रकृति, धरती, वन और वन सम्पत्ति से सीधा जुड़ा आन्दोलन है। हमें सदैव यह स्मरण रखना चाहिए कि भूमि का क्षय चाहे किसी भी प्रकार का हो वह सम्पूर्ण पर्यावरण के लिये घातक बनता है। वनों के स्थान पर रेगिस्तान बनते हैं जब वनों को आर्थिक लाभ के लिये काटा जाता है। चिपको आन्दोलन का महत्त्व तो इतना व्यापक बन चुका है कि स्वीडन ने तो इसे अंग्रेजी सिखाने के प्रौढ़ शिक्षा के पाठ्यक्रम में भी शामिल कर लिया है। चिपको आन्दोलन की वास्तविकता तो आज यह है कि यह हिमालय के अंचलों से निकलकर कई राज्यों में सशक्त दस्तक दे रहा है जिसमें उड़ीसा, छोटा नागपुर, बस्तर तथा मूक घाटी में चिपको आन्दोलन चला है और धीरे-धीरे यह विश्व के कई देशों में आज पहुँच चुका है। सुन्दरलाल बहुगुणा को अनेक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से नवाजा गया है। जैसे राष्ट्रीय एकता पुरस्कार, जमुनालाल बजाज पुरस्कार, राइट लिवली हुड पुरस्कार, मैन आफ द डीस अवार्ड, फ्रेन्डस ऑफ नेचर अवार्ड केनाडा, अवार्ड फार इनवायरमेन्ट कन्जरवेशन आदि। भारतीय सरकार ने बहुगुणा को पद्मश्री से सम्मानित करना चाहा पर इसे उन्होंने विनम्रता पूर्वक अस्वीकार कर दिया।

नदी, बाँध और पर्यावरण (River, Dam and Environment)

वास्तव में, 'पर्यावरण एक बहुअर्थी' व्यापक और विशाल शब्द है जिसका सीधा संबंध पृथ्वी पर निवास करने वाले जीव-जन्तु से भी और पेड़, पौधे, नदी, पहाड़, खेत, वन आदि से

19. सुन्दरलाल बहुगुणा, चिपको, पृष्ठ 8.

भी है। ये सभी भारतीय संस्कृति में अपना विशेष महत्त्व रखते हैं। भारतीय संस्कृति और धर्म में शायद ही कोई ऐसी चीज है जिसकी पूजा और अराधना न की जाती हो। प्रकृति की छोटी से छोटी चीज भी मनुष्य के लिये उपयोगी ही नहीं है, वरन् वह ईश्वर के अंश के रूप में देखी जाती है। इसीलिये खेत, वन, नदी, पहाड़, पृथ्वी, आकाश, सूर्य, चन्द्र, वृक्ष, पशु और पक्षी आदि सभी पूजे जाते हैं। जब कभी व्यक्ति इनका शोषण करता है अथवा अपने स्वार्थ के लिये इनको हानि पहुँचाता है तब ऐसे कार्यों के विरुद्ध वे आन्दोलन करते हैं। जनसंघर्ष का मोर्चा बनता है और सरकार की कार्यवाही के विरुद्ध आवाज बुलन्द की जाती है।

सरकार विभिन्न कार्यों के लिये बांधों का निर्माण करती है। जहाँ यह खेत की सिंचाई के लिये आवश्यक है, वहीं बिजली उत्पादन के लिये भी जरूरी है, पर जब यह बाँध हजारों लाखों कृषकों को बेघर कर दे तो निश्चय ही बाँध मानव जीवन और पर्यावरण के लिये हानिकारक बन जाते हैं।

मेधा पाटकर पर्यावरण के संबंध में लिखती हैं कि 1970 में ब्रूटलैण्ड कमीशन की पर्यावरण पर रिपोर्ट प्रकाशित हुई। इसका प्रभाव ग्लोबल नीति निर्धारण पर भी पड़ा। भारत पर भी पड़ा। गत तीन दशकों से प्राकृतिक साधनों और पर्यावरण की सुरक्षा हेतु तरह-तरह के आन्दोलन चलाये जा रहे हैं जो भूमि, पानी, वन, वन पशु, वायु, प्रदूषण से जुड़े हैं। आज एक व्यापक पर्यावरणीय दृष्टि विकसित हुई है। भूमन्डलीकरण, उदारीकरण, निजीकरण की नीति पर्यावरण के लिये चुनौती बन गई है। इसके विकल्प के साधन तलाशने होंगे जो मानव समाज और आर्थिक पक्ष के लिये हितकर हो। इसके लिये लोकतांत्रिक प्रक्रिया अपनानी होगी।[20] यह उद्धरण इस तथ्य का प्रतीक है कि पर्यावरण को क्षति पहुंचाये बगैर विकास के नये रास्ते और साधन खोजने होंगे जिनसे मानव समाज समृद्ध और खुशहाल बन सके। किन्तु दुर्भाग्य यह है कि सरकार भी प्राकृतिक पर्यावरण का दोहन विकास के नाम पर करती है। बाँध निर्माण भी उन्हीं में से एक है। जीवन के लिये अनिवार्य जल समस्या का निराकरण बाँध बनाने के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

हिमालय के अनेक अंचलों पर बाँध बनाने की योजनायें चलने लगी। सरकार ने कार्यवाही की बात की। इसके विरुद्ध हिमालय क्षेत्र से जमीन से जुड़े कार्यकर्ताओं और प्रबुद्ध वर्ग ने 'हिमालय बचाओ आन्दोलन' की घोषणा कर दी। हिमालय बचाओ का विचार टिहरी में भागीरथी पर बनने वाले देत्याकार बांध के विरुद्ध चलने वाले जन आन्दोलन में से निकला है। 20 अक्टूबर, 1991 को उत्तरकाशी में आये भूकम्प के बाद टिहरी बांध की योजना पर पुनर्विचार किया गया। नदी बहाव वाली जल विद्युत परियोजना में बदलने की माँग को लेकर 8 महिने तक धरने और प्रदर्शन किये गये। सरकार ने आन्दोलन को कुचलने के लिये कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। इन दमनकारी नीतियों के बावजूद उत्तराखण्ड के विद्वान और सक्रिय

20. मेधा पाटकर, सर्वे आफ द इनवायरमेन्ट, 2000, पृष्ठ 61.

Scanned with CamScan

कार्यकर्ता एक मंच पर आये और इन्होंने 13, 14, 15 मई को टिहरी से ही भागीरथी के तट पर धरना स्थल से हिमालय बचाओ की घोषणा का उद्घोष किया।[21] उत्तराखण्ड से जो आवाज उठी वह शीघ्र ही हिमालय के अन्य क्षेत्रों में फैल गई। भारत में भाखड़ा और पोंग बाँध बनने से हजारों हजार विस्थापित लोग आज तक स्थापित नहीं हो पाये हैं। टिहरी बाँध से विस्थापित होने वाली जनसंख्या 86 हजार है और 3 लाख से अधिक लोग प्रभावित हुए हैं। यह बाँध यदि टूट गया तो करोड़ों लोग इसके शिकार हो जायेंगे। बांध बनने से जो उपजाऊ मिट्टी नदियों के द्वारा लाई जाती थी वह भी थम जायेगी और इससे कृषि और किसान दोनों को काफी क्षति पहुंचेगी क्योंकि उत्तम भूमि जल मग्न हो जायेगी। **बहुगुणा** कहते हैं कि "हिमालय में ज़िन्दा रहने के लिये प्रकृति की तीन देन है -जल, जंगल और जमीन में से जंगल और जमीन तो समाप्त प्रायः हैं, अब बिमार हिमालय को जीवन्त बनाने का एक मात्र साधन जल है। बाँध बनाकर उसका निर्यात प्राकृतिक न्याय के विरुद्ध है। लोगों को धोखे में रखकर, इस संसाधन की कानूनी डकैती है और हिमालय को मौत की ओर धकेलने का घिनौना षड्यन्त्र है।[22]"

13, 14, 15 मई, 1992 को टिहरी बाँध स्थल के निकट 'हिमालय बचाओ सम्मेलन' का घोषणा पत्र है जिसकी मुख्य बात यह है कि "भोगवादी सभ्यता की बुनियाद पर आधारित नीतियों ने गंभीर रूप से घायल हिमालय के घावों को भरने के बजाय उसकी जल, जंगल और खनिज सम्पदाओं का शोषण करने की गति को तीव्र कर दिया है। इस बाँध का पिछले 20 वर्षों से सतत विरोध हो रहा है। यह आर्थिक दृष्टि से दिवालिये, समाज का विघटन, संस्कृति की हत्या तथा पारिस्थितिकीय तबाही लाने वाला है। इसलिये आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और परिस्थितिकीय मूल्यों की रक्षा के लिये इसे तत्काल बन्द करने का हम हर सम्भव प्रयास करेंगे।"

हरिद्वार में पहला गंगा बचाओ आन्दोलन (First Movement to Save Ganga in Haridwar)

देश में बाँध निर्माण के विरुद्ध जन चेतना युक्त आन्दोलन समय के साथ बढ़ता गया है। बाँध के बनने से जितना लाभ नहीं है कालान्तर में उससे कहीं अधिक क्षति आस-पास के निवासियों को, कृषि और कृषि भूमि को पहुँचेगी। खेती की भूमि की उर्वरा शक्ति दिन प्रति दिन कम होती जायेगी। इस दृष्टि से बाँध निर्माण के विरुद्ध विरोध सर्व प्रथम 75 वर्ष पूर्व गँगा पर बाँध को लेकर हुआ था। **कौशल किशोर** कहते हैं कि "नर्मदा और टिहरी बांधों के लिये जारी आन्दोलनों को देखकर आज से पचहत्तर वर्ष पूर्व गंगा पर बांध को लेकर हुआ वह संघर्ष याद आ जाता है जो एक प्रकार से विश्व का पहला बाँध विरोधी

21. सुन्दरलाल बहुगुणा, हिमालय बचाओ आन्दोलन, पृष्ठ 1-2.
22. बहुगुणा, हिमालय बचाओ आन्दोलन, पृष्ठ 4.

Scanned with CamScan

आन्दोलन था। इससे पूर्व और बाद में दुनियाँ में जलधाराओं से सम्बन्धित कई आन्दोलन हुए, परन्तु हरिद्वार का आन्दोलन विश्व का प्रथम बाँध विरोधी सफल आन्दोलन कहा जा सकता है ...... वह दिन वस्तुत: अलौकिक रहा होगा, जब 1914 में देश की जानी मानी रियासतों की नंगी तलवारें बाँध को रोकने के लिए हर की पैड़ी पर लहरा उठी थी। इक्कीस नरेशों ने अपने वाहनों पर सवार होकर महामना मदन मोहन मालवीय के नेतृत्व में ब्रिटिश सरकार के खिलाफ दुदंभि बजा दी। अखण्ड भारतवर्ष का राष्ट्रीय समाज एकमत से गंगा पर बन रहे बाँध के विरोध में उठ खड़ा हुआ।[23]''

गंगा बाँध बचाओ आन्दोलन ने जन समुदाय और पुरोहितों को भी आन्दोलन में आगे आने के लिये प्रेरित किया क्योंकि गंगा नदी नहीं है। भारत की संस्कृति और धर्म की प्रतीक है। उसके प्रवाह को बांधा कैसे जा सकता है? यह भारत की अस्मिता का प्रतीक है। जन-जन का यह नारा बन गया 'गंगा बंधकर बहेगी', 'बंधा हुआ जल मृतकों की अस्थियों के लिये', 'कुंभ की नगरी में बंधित जल' आदि नारों ने गंगा बचाओ आन्दोलन को जन आन्दोलन के रूप में परिणित कर दिया। राजा, महाराजा, नेता, समाज सेवक पुरोहित, बुद्धिजीवी सभी एकजुट होकर गंगा बचाओ आन्दोलन में शामिल हो गये। अन्तत: सरकार ने जन आन्दोलन के सम्मुख घुटने टेक दिये। लेकिन चालबाज अंग्रेज बाँध बनाने का प्रयास करते रहे और वे बार-बार मात खाते रहे। 1914-1916 का आन्दोलन भी ऐसा ही था। मदन मोहन मालवीय जी की भूमिका इसमें सराहनीय थी। गंगा बचाओ आन्दोलन ने राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं वरन् विश्व में अपनी पहचान बनायी। इससे प्रेरित होकर अमेरिका, कनाडा और यूरोप के कुछ शहरों में भी बाँध विरोधी आन्दोलन किये गये।

नर्मदा घाटी का आन्दोलन (Narmada Valley Movement)

स्वतंत्रता के 55 वर्ष बीत जाने के पश्चात भी हम नदियों और नदियों के तट पर बसे नगरों, कस्बों और गावों को सुरक्षित नहीं रख सके। उनके बिगड़ते स्वरूप को संवार नहीं सके हैं। उनकी प्रवाह की गति को बनाये नहीं रख सके। नदियाँ या तो सूख रही हैं अथवा घाटों से दूर जा रही हैं। बाढ़ आने पर पूरे के पूरे गाँव को निगल रही हैं। अरबों रूपयों को व्यय करने के पश्चात भी हम नदियों के विकास में सफल नहीं हुए हैं। इतना अवश्य हुआ है कि घोटालों और भ्रष्टाचार के कारण मंत्रियों, नेताओं, समाज सेवकों, दलालों, बड़े अधिकारियों और अभियन्ताओं के घर अवश्य खुशहाली के बाग खिल गये हैं और शेष सूखाग्रस्त हो गये हैं। दुख इस बात का है कि हमने साम्राज्यवादी शक्तियों को मात दी है। उन्हें उलटे पैर भगाया है पर हम अपने ही देश के चन्द भ्रष्ट लोगों और उनकी राजनीतिक व्यवस्था से परास्त हो रहे हैं। बाँध निर्माण की योजना के पीछे भी बहुत कुछ काला है।

23. कौशल किशोर, गंगा बचाओ, पृष्ठ 4.

Scanned with CamScan

टिहरी बाँध (Tihari Dam)

देश के अन्य बांधों की तरह टिहरी बाँध से भी असंख्य निवासियों को तरह-तरह की परेशानियों और समस्याओं से जूझना पड़ेगा। सरकार अल्पकालीन लाभों का स्वप्न बिखेरती है और कुछ समय के पश्चात स्वप्न टूटते हैं और आम जनता को हानि पहुंचती है। जल और विद्युत की समस्या का समाधान नदियों पर बांधों का निर्माण करना नहीं है। बहुगुणा के शब्दों में ..... ''एशिया का सबसे ऊंचा बाँध रूस की मदद से भागीरथी पर टिहरी में बन रहा है। 260 मीटर ऊंचे इस बाँध से 42 वर्ग कि.मी. की झील बनेगी। इस बाँध की ओर पश्चिमी उ.प्र. के किसान सिंचाई के लिये, यद्यपि इसकी सिंचाई क्षमता प्रारम्भिक 62 हजार हेक्टेयर से घटकर अब आधी रह गयी है, तो दिल्ली के नागरिक पीने के पानी की आपूर्ति के लिये आशा भरी निगाहों से देख रहे हैं, राजस्थान भी अपना हिस्सा मांगता है। पश्चिम बंगाल ..... पानी की कमी का सवाल उठाते हुए टिहरी बाँध के पानी की माँग की है। उधर टिहरी के आसपास के लोगों ने भूकम्प के सक्रिय क्षेत्र में बनने वाले इस बाँध की संभावित दुर्घटना से अपने प्राणों की रक्षा के लिए, जीवन के अधिकार के प्रश्न को लेकर उच्चतम न्यायालय में न्याय के लिये गुहार की है।[24] इस बाँध की आयु 100 वर्ष मानी गई थी। गाद भरने के कारण इसकी आयु घटकर 60 वर्ष आंकी जा रही है। सत्येश्वर प्रसाद नौटियाल के अनुसार यह 30-40 वर्षों में गाद से भर जायेगा। यही हाल देश के सभी बाँधों में घटित होगा। यहाँ पर प्रश्न उठता है कि बाँध निर्माण पर अरबों रुपये क्यों व्यय किये जायें जिससे निवासियों और जनता को लाभ कम और हानि अधिक हो। इतने ही धन में हमें जल की वैकल्पिक व्यवस्था और प्रबन्धन करना चाहिए।

वास्तव में टिहरी बाँध के साथ अनेक प्रश्नों का उत्तर देने में सरकार, विशेषज्ञ और अभियन्ता असमर्थ रहे हैं। सरकारी अधिकारी तो सरकार के साथ ही हाँ में हाँ मिलाते हैं। उदाहरण के लिये सन् 1968 में उत्तरकाशी जिले में कनोडिया गाड के उद्‌गम से जो 3 कि.मी. लम्बा भूस्खलन हुआ था, उसका कारण क्या था? उसके ठीक 13 वर्ष पश्चात भूकम्प आया। इसका केन्द्र दक्षिण की ओर बढ़ रहा है। क्या अगले भूकम्प का केन्द्र बिन्दु टिहरी बाँध के निकट श्रीनगर भ्रंश पर नहीं होगा? इतना ही नहीं अधिक वर्षा होने पर बाँध की सुरक्षा करनी पड़ती है और अतिरिक्त जल को निकालना पड़ता है। इससे कृत्रिम बाढ़ आती है जो आस-पास के निवासियों के लिये तबाही का कारण बनती है। सितम्बर, 1988 की तरह भाखड़ा द्वारा इसी प्रकार की घटना हुई थी। बाँध परियोजना की सुरंगों को बनाने के लिये शक्तिशाली विस्फोट किये जाते हैं। इससे आस-पास के मकान तक हिल उठते हैं। लोगों ने इसका विरोध किया किन्तु विकास की आंधी में यह दबा दिया गया। इन विस्फोटों से टिहरी बाँध स्थल के लोग भयभीत है। इनके मकानों में दरारें पड़ गयी हैं। टिहरी बाँध पर **सुन्दरलाल बहुगुणा** का दुःख और दर्द इन शब्दों में देखा जा सकता है-

---

24. सुन्दरलाल बहुगुणा, हिमालय बचाओ आन्दोलन, पृष्ठ 7.

Scanned with CamScan